विनोद कुमार शुक्ल

हरी घास की छप्पर वाली झोपड़ी और बौना पहाड़! (XIII)

भजिया बनाने वाला चार-पाँच साल हुए बजरंग होटल में काम कर रहा था। होटल में काम करने से भय लगने लगा था। एक बार भागने की उसने कोशिश की। भाग कर वह घने जंगल में छुप गया। इतनी दूर आकर जैसे ही उसने सोचा कि वह बच गया वैसे ही बिलकुल पास उसे बजरंग महराज की आवाज़ आई, "अँधेरा होने के पहले होटल लौट आना।" इसके बाद शेर दहाड़ने लगे। एक सियार दहाड़ सुनकर भागने लगा। होटल लौटने का रास्ता वह भूल चुका था। शेर से बचने का रास्ता सियार ने चुना था वही रास्ता भजिया बनाने वाले ने भी चुना। वह सियार के पीछे भागने लगा। सियार भागते हुए बौने पहाड़ के एक चट्टान के नीचे घुस गया। भजिया बनाने वाला भी चट्टान के नीचे घुस गया। चट्टान के नीचे दो गुफाएँ थीं। सियार किस गुफा में घुसा वह यह देख नहीं पाया था। दाहिने हाथ की गुफा में वह घुस गया। गुफा के अन्दर अँधेरा था। टटोल-टटोलकर वह बढ़ रहा था। उसे लगा रहा था कि अँधेरा हो गया है। बजरंग महराज ने कहा था कि अँधेरा होने से पहले लौट आना। पर अँधेरा नहीं हुआ था। कुछ आगे जाने से उसे हल्का उजाला दिखने लगा था। वह गुफा के मुहाने तक पहुँच गया। गुफा के मुँह से वह बाहर निकला। दो चट्टानों के बीच सँकरी जगह थी। दोनों चट्टानों की दीवाल के ऊपर छत की तरह एक चट्टान पड़ी थी। बाहर आकर उसने देखा सामने थोड़ी दूर पर बजरंग होटल है। वह होटल के सामने अजीब सकते में उपस्थित हुआ था।

उसने देखा एक ऊँची चट्टान के ऊपर सियार खड़ा था। वही सियार जिसके पीछे वह आया था। और सियार ने जैसे उसे होटल का रास्ता दिखाया था। क्या यह सब बजरंग महराज के कहने से हुआ था?

इसके बाद भजिया बनाने वाला सिर झुकाए होटल में अपनी जगह जाकर खड़ा हो गया और काम में लग गया। वह कई दिन सिर झुकाए रहा। बस्ती में भी सिर झुकाए आता जाता। और सोते समय भी सिर झुकाए रहता, पर यह पता कहाँ चलता है कि सिर झुकाए सो रहा है। परन्तु उसे नींद तभी आती जब उसे लगता कि लेटे रहने में उसने सिर को झुका लिया है। और अब वह चैन की नींद सो सकेगा। होटल में ही वह सोता था। सीधे सुबह नींद खुलती। वह नहीं चाहता था कि उसकी नींद रात में कभी खुले। रात में नींद खुलने के डर से वह रोज़ बिस्तर पर जैसे लेटते ही बेहोश हो जाता था। होटल में सोने के लिए बजरंग महराज ने उसे भैरा से कहलवाया था। बरामदे के एक कोने में वह सोता था।

भजिया बनाने वाले को बाद में याद आया कि पत्तों के दबने से जो चरमर की आवाज़ थी बजरंग महराज के चमरौधे जूते की आवाज़ से मिलती-जुलती थी। होटल में सोने की पहली रात उसे ठीक से नींद नहीं आई थी। रात में उसे चरमर,चरमर की आवाज़ आ रही थी। जैसे बजरंग महराज चल रहे हों। चलते हुए दूर जा रहे हों। फिर इतनी दूर चले गए हों कि चरमर की आवाज़ नहीं आ रही है। बहुत देर बाद दूर से उनके पास आने की आवाज़ आती कि लौट रहे हैं। फिर आवाज़ बन्द हो जाती कि आ गए और तखत पर लेट गए। फिर इतना सन्नाटा हो जाता कि बजरंग महाराज के सोने के साथ-साथ उनका जूता भी सो गया हो। कहीं ऐसा तो नहीं कि बजरंग महराज जंगल में टहलते हो और उसकी आवाज़ कमरे में आती हो। या कमरे में टहलते हों और आवाज़ जंगल में आती हो। या वे कमरे में टहलते हों तो कमरे में आवाज़ आती हो। तभी शेर भी जंगल में टहलने लगता हो और जंगल में आवाज़ आती हो।

एक दिन उसने बरामदे में देहरी के पास एक बड़ा-सा चमरौधा जूता देखा। यह एक जूता बरामदे में कैसे आ गया? दूसरा जूता कहाँ है? ये किसका अकेला जूता है? काले रंग का मटमैला। जूते के चमड़े में झुर्रिया थीं कि बहुत पुराना है। बूढ़ा जूता। बजरंग महराज इतने बूढ़े नहीं होगे। बजरंग महराज के पिता का होगा। खानदानी जूता। जूते के तले में चौड़े मत्थे के खीले ठुके थे कि तला घिसे नहीं। परन्तु इस कारण जूता ऐसा था कि शेर को जूते से मारें तो वह भी मर जाए – यह किसी ने कहा नहीं था। यह किसी ने सोचा भी नहीं था। परन्तु बजरंग महराज के साथ सन्दर्भ बन सकता था।

बजरंग महराज को बरामदे में आया हुआ कभी देखा नहीं गया था। तब जूता क्या खुद चलकर आया होगा? अकेला जूता। दूसरा जूता खुद चलकर कहाँ गया। बजरंग महराज का जूता उनके पालतू जैसा। उनके "आ, आ" कहकर बुलाने से शायद आ जाए। उस जूते की ऐड़ी में खड़ी पूँछ जैसी चमड़े की पट्टी थी। जूते के मुँह में पैर डालने की सुविधा के लिए या खीले में टाँगने के लिए अथवा उँगली में लटकाकर चलने के लिए। इस तरह के जूते बेचने वाले इसी से जोड़ी में सुतली बाँधकर कँधे में लटका लेते थे। पहनने का समय होते ही ये पालतू जूते इसे पूँछ की तरह हिलाते होंगे।

भजिया बनाने वाला काम में लग गया था। होटल में ग्राहक थे। तब एक ग्राहक ने जूते को चलते हुए देखा। कमरे के अन्दर से जूते को बुलाने की धीरे-धीरे "आ, आ" की आवाज़ आ रही थी। और देहरी लाँघ कर जूता अन्दर चला गया। तब ग्राहक प्लेट में चाय डालकर चुस्की ले रहा था। वह इतना अचम्भित था कि उसकी केवल एक खिंची साँस के

चित्र - अतनु राय

साथ प्लेट की पूरी चाय गले के अन्दर चली गई। उसे यह मालूम नहीं पड़ा था कि उसने चाय पी। शायद उसने चाय की साँस ली थी। इसके बाद उसकी साँस कुछ देर के लिए रुक गई थी। यदि उसकी साँस नहीं रुकती और वह फिर साँस छोड़ता तो चाय की साँस छोड़ता। अगर वह इस बात को किसी से बताता तो उसकी बात पर विश्वास नहीं होता। होटल से बाहर निकलते ही उसे भी ठीक से विश्वास नहीं हो रहा था कि क्या उसने सच में ऐसा देखा था।

इसके बाद वह जब भी चाय पीने आता तो जूते को इधर-उधर देखता कि चलते हुए कभी दिख जाए। कुछ ग्राहक बरामदे में चढ़ने के पहले जूते को इधर-उधर देखते कि चलते हुए कभी दिख जाए। कुछ ग्राहक बरामदे में चढ़ने के पहले जूते उतारकर हाथ-पैर धोते तो जूते को वहीं बरामदे के बाहर छोड़ देते कि पैर गीले हैं। एक बार एक ग्राहक के जूते नहीं मिले। धोखे से कोई पहन कर चला गया होता। तब जिसने चमरौधे जूते को चलते हुए देख था उसने उस आदमी से पूछा, "आपके जूते खो गए?"

"हाँ, भाई।" उसने कहा।

"अपने आप कैसे खो सकते हैं।" उसने आश्चर्य प्रकट किया जिसने जूतों को चलते हुए देखा था।

"अपने आप क्यों खोएँगे। जूते तो मुझसे खो गए हैं।" जिसके जूते थे उसने कहा। पर उसे कुछ समझ नहीं आया कि बात का मुद्दा क्या है।

"जूते आप से नहीं गुमे हैं। आपने तो सम्हाल कर रखे थे।" उसने कहा। बस्ती में कभी चोरी नहीं हुई।

"तो फिर?" उसने पूछा जिसके जूते खो गए थे।

"आपको पैर से उतारना नहीं था। आप जहाँ जाते हैं जूतों को भी वहीं जाना पड़ता है क्योंकि आप उसे पहने हुए होते हैं। जूते अपने मन से भी कहीं जाना चाहते हैं। चले गए होंगे। पालतू नहीं हुए होंगे। इसलिए लौटकर नहीं आए। कितना पुराना जूता है?"

जारी...